कथा सरिता

निःस्वार्थ प्रेम

एक बार एक ग्वालन दूध बेच रही थी और सबको दूध नाप-नाप कर दे रही थी। उसी समय एक नौजवान दूध लेने आया तो ग्वालन ने बिना नापे ही उस नौजवान का बरतन दूध से भर दिया। वहीं थोड़ी दूर पर एक साधु हाथ में माला लेकर मनकों को गिन-गिन कर माला फेर रहा था। तभी उसकी नज़र ग्वालन पर पड़ी और उसने ये सब देखा और पास ही बैठे व्यक्ति को सारी बात बताकर इसका कारण पूछा। उस व्यक्ति ने बताया कि जिस नौजवान को उस ग्वालन ने बिना नाप के दूध दिया है वह उस नौजवान से प्रेम करती है। इसलिए उसने उसे बिना नाप के दूध दे दिया।

यह बात साधु के दिल को छू गई और उसने सोचा कि एक दूध बेचने वाली ग्वालन जिससे प्रेम करती है तो उसका हिसाब नहीं रखती और मैं अपने जिस ईश्वर से प्रेम करता हूँ उसके लिए सुबह से शाम तक मनके गिनगिन कर माला फेरता हूँ। मुझसे तो अच्छी वो ग्वालन ही है। और उसने माला तोड़कर फेंक दी। जीवन भी ऐसा ही है। जहाँ प्रेम होता है वहाँ हिसाब-किताब नहीं होता है और जहाँ हिसाब-किताब होता है वहाँ प्रेम नहीं होता है, सिर्फ व्यापार होता है।

अतः प्रेम भले ही वो पत्नी से हो, भाई से हो, बहन से हो, रिश्तेदार से हो, पड़ोसी से हो, दोस्त से हो या फिर भगवान से। निःस्वार्थ प्रेम कीजिए जहाँ कोई गिनती न हो, बस प्रेम हो।

किसने किसको....

एक व्यक्ति बैल को गले और नाक से बांधकर लिए चला जा रहा था। दो लोगों ने उसे देखा। पहले ने कहा, देखो इस व्यक्ति ने बिचारे बैल को बांध रखा है। दूसरे ने कहा, नहीं इस बिचारे व्यक्ति को बैल ने बांध रखा है। दोनों में बहस शुरू हो गई।

बैल और व्यक्ति तब तक पास आ चुके थे। बैल के मालिक ने कहा, मैंने बैल को बांधा है, मैं इसका मालिक हूँ, इस जानवर की क्या बिसात जो यह मुझे बांध! इतने में एक अजूबा घटा। बहुत ज़ोर से चिंघाड़ता हुआ जंगली हाथी उस ओर आ धमका। उसे देख बैल डर गया। वह इतना तेज़ दौड़ा, जो रस्सी पकड़े हुए उसका मालिक पीछे-पीछे घिसटता चला गया और लहू लुहान हो गया। रस्सी हाथ से छूट गई और बैल का दूर-दूर तक भी अता-पता न चल सका।

प्रश्न यह उठता है कि क्या किसी को बांधने वाला स्वयं मुक्त रह सकता है? लोग धन-संपत्ति को जोड़कर रखना चाहते हैं, परंतु स्वयं भी उसके बंधन से कहाँ मुक्त रह पाते हैं। धन -संपत्ति उन्हें इतना बांध लेती है कि वे मन की शांति और तन का स्वास्थ्य भी खो देते हैं। हाँ एक बंधन ऐसा है जिसमें बंध कर भी मानव पूर्ण मुक्त रह सकता है। इसे बंधन न कह कर संबंध कहना ज़्यादा उचित होगा।

यह है आत्मा और परमात्मा का प्यार भरा बंधन(संबंध) । इस संबंध को जोड़कर मानव एक जन्म के नहीं वरन् अनेक जन्मों के पाप, दुःख, अशांति, अपवित्रता के बंधन से छूट, सुख के संबंध में मौजों का अनुभव करता है।

शब्द की ज्योत

सूफी फकीर हसन एक गाँव में साँझ के वक्त गया, उसने एक छोटे बच्चे को हाथ में दीया लेकर पास की एक मज़ार की तरफ जाते देखा। उसने मस्ती में उस बच्चे से पूछा, बेटा यह दीया लेकर कहाँ जा रहे हो? उस बच्चे ने कहा, मज़ार पर चढ़ाने जा रहा हूँ जी। फकीर हसन ने पूछा, क्या यह दीया तुमने ही जलाया था?

उस बच्चे ने कहा, जी हुजूर, ये दीया मैंने जी जलाया था। तो फकीर हसन ने कहा, बच्चे मेरी एक बात का जवाब दो। तुमने जब ये दीया जलाया था तो इसमें ज्योति कहाँ से आई थी? क्योंकि तुमने ही दीया जलाया, यह ज्योत तुम्हारे सामने ही आई होगी, लेकिन ये आई कहाँ से? फकीर हसन तो बच्चे के साथ मज़ाक कर रहा था।

मगर कभी-कभी मज़ाक बहुत महंगा पड़ जाता है। उसे तो बिल्कुल अन्दाज़ा नहीं था कि वो छोटा सा बच्चा ऐसा करेगा। उस बच्चे ने मुस्कुरा कर फकीर की तरफ देखा और दीये में फूँक मार दी। फूँक मारते ही दीया बुझ गया। उस बच्चे ने हसन से पूछा, जनाब आपके सामने ही दीया बुझा है, क्या आप मुझे बता सकते हैं कि दीया बुझते ही ज्योत कहाँ गई?

हसन ने झुककर उस बच्चे के पैर छुए और कहा बेटा, मैं तो मज़ाक कर रहा था, लेकिन तूने मेरे दिल को भारी चोट पहुंचाई है। असल में ना ज्योत कहीं से आती है, ना ही कहीं जाती है, सिर्फ पवित्र दिलों में प्रकट होती है और बाकी सभी में छुपी होती है। जब तक शब्द की ज्योत हमारे शरीर में जलती रहती है, तो आदमी बोलता है, उठता है, चलता है, खाता-पीता है, भाव ज़िन्दा रहता है। आत्मा को किसी ने देखा नहीं है। हमने कभी अपने में ही नहीं देखी तो किसी दूसरे में आत्मा को कैसे देखेंगे?

जिस दिन अपने में देख लोगे उस दिन चकित हो जाओगे। देह तो कुछ भी नहीं है, केवल एक कपड़ा है और हम इस मामूली से पर्दे को ही सबकुछ समझे बैठे हैं! निश्चित ही ये कपड़ा एक दिन फट जायेगा, आदमी मर जायेगा, लेकिन जो पर्दे के पीछे है आत्मा, वो तो अमर है, वो तो परमात्मा का अंश है। सिमरन से मन एकाग्र होता है, पूर्ण एकाग्रता होने पर ध्यान बनता है, ध्यान पक जाने पर धुनें प्रकट होती हैं, धुन आत्मा को निज घर ले जाती है।

कोलकाता-श्यामनगर। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा बैरकपुर के सुकांता सदन ऑडिटोरियम में आयोजित दो दिवसीय 'की टू हैप्पी एंड हेल्दी लिविंग' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए राजयोगी ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू, सेंट्रल इनफॉर्मेशन एंड इंटेलिजेन्स के डेप्युटी डायरेक्टर गौतम बोस, विधायक शील भद्र दत्त, एस.डी.ओ. ए.के. आज़ाद इस्लाम, ज्युडिशियल एकेडमी के डायरेक्टर श्यामल गुप्ता तथा सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कमला।

चित्तौड़गढ़-राज.। जिला कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह को माउण्ट आबू आने का निमंत्रण देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिनीता।

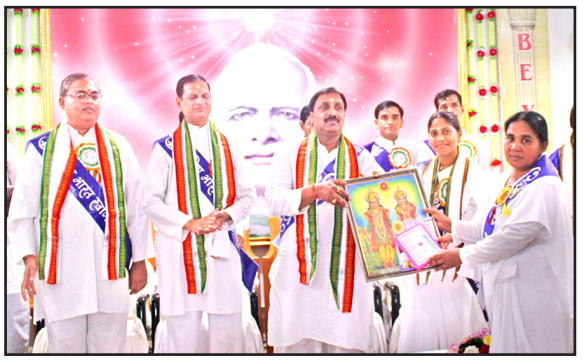

भुवनेश्वर-पटिया। 'मेरा भारत स्वर्णिम भारत' अभियान के कार्यक्रम में विधायक प्रियदर्शी मिश्रा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. गोलप।

समस्तीपुर-बिहार। 'ईज़ी लाइफ फॉर बिज़ी ज्यूरिस्ट्स' विषयक ज्युरिस्ट कॉन्फ्रेन्स का उद्घाटन करने के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. रानी दीदी, मुज़फ्फरपुर, न्यायमूर्ति वी. ईश्वरैय्या,हैदराबाद, जिलाधिकारी चन्द्रशेखर सिंह, जिला एवं सत्र न्यायाधीश संजय कुमार उपाध्याय, अति. जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रणव कुमार झा, ब्र.कु. सविता तथा ब्र.कु. कृष्ण।

रोहतक-हरियाणा। पंडित भगवत दयाल शर्मा स्वास्थ्य विज्ञान विश्वविद्यालय के डेंटल कॉलेज में न्यूरोलॉजी विभाग एवं डेंटल कॉलेज के पीरियोडॉन्टिक्स विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 'वैल्यूज़ इन हेल्थ केयर स्पीरिचुअल अप्रोच' विषयक वर्कशॉप के दौरान समूह चित्र में महात्मा गांधी अस्पताल जयपुर के चीफ कार्डियोवैस्क्युलर सर्जन डॉ. बलराम ऐरन, कुलपति डॉ. ओ.पी. कालरा, निदेशक डॉ. नित्यानंद, प्राचार्य डॉ. संजय तिवारी, डॉ. किरण, ब्र.कु. आशिमा तथा अन्य।

नकारात्मकता से सकारात्मकता

एक युवा महिला अपनी डायनिंग टेबल पर बैठी थी और इस बात से परेशान थी कि इनकमटैक्स देना पड़ता है। घर का ढेरों काम करना होता है और ऊपर से कल त्यौहार के दिन लंच पर बहुत से रिश्तेदार भी आने वाले हैं। कुल मिलाकर वो बहुत परेशान थी। पास ही उसकी 10 साल की बेटी अपनी स्कूल नोटबुक लिए बैठी थी। माँ के पूछने पर उसने बताया कि टीचर ने होमवर्क दिया है कि नकारात्मकता को हमें धन्यवाद देना चाहिए और कहा कि उन चीज़ों पर एक पैराग्राफ लिखो जो प्रारम्भ में हमें अच्छी नहीं लगती, लेकिन बाद में वो अच्छी ही होती हैं। मैंने एक पैराग्राफ लिख लिया है।

उत्सुक्तावश माँ ने बेटी से नोटबुक ली और पढ़ने लगी कि बेटी ने क्या लिखा है। बेटी ने लिखा था कि मैं अपनी फाइनल एग्ज़ाम को धन्यवाद देती हूँ, क्योंकि इसके बाद स्कूल बंद होकर छुट्टियां लग जाती हैं। मैं उन कड़वी, खराब दवाइयों को धन्यवाद देती हूँ, जो मेरे स्वस्थ होने में सहायक होती हैं। मैं सुबह सुबह जगाने वाली उस अलार्म क्लॉक को धन्यवाद देती हूँ, जो मुझे सबसे पहले बताती है कि मैं अभी जीवित हूँ। माँ ने पढ़ते पढ़ते महसूस किया कि उसके खुद के पास भी तो बहुत कुछ ऐसा है जिसके लिए वो भी धन्यवाद कह सकती है। उसने सोचा कि उसे इनकमटैक्स देना होता है, इसका मतलब है कि वो सौभाग्यशाली है कि उसके पास एक अच्छी सैलरी वाली बढ़ियां नौकरी है। उसे घर का बहुत काम करना पड़ता है, इसका मतलब है कि उसके पास एक बड़ा परिवार है, जिनके साथ वो त्यौहारों पर सेलिब्रेट करती है। हम नेगेटिव बातों या चीज़ों को लेकर बहुत शिकायतें करते हैं, लेकिन उनके पॉज़ीटिव पक्ष को समझने, देखने में असमर्थ रहते हैं।

आइये, हम समझें कि हमारे नेगेटिव में क्या पॉज़ीटिव है और अपने हर दिन को एक बेहतरीन दिन बनायें।

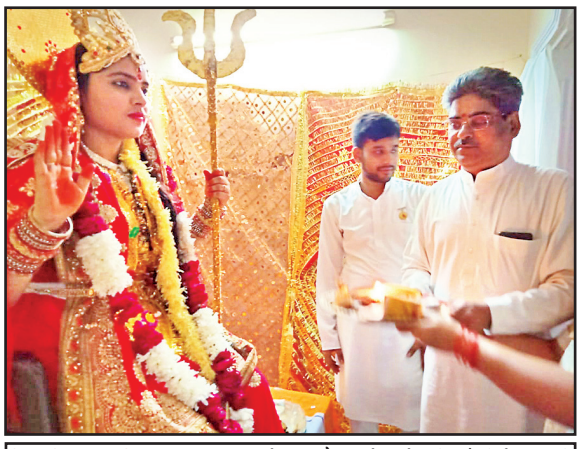

दिल्ली-इन्दुपुरी। नवरात्रि पर आयोजित चैतन्य देवियों की झाँकी में आरती करते हुए नेशनल फूड कॉर्पोरेशन के जनरल मैनेजर नीरज वर्मा।

गाज़ियाबाद-अंकुर विहार। 'आध्यात्मिक चैतन्य देवियों की झाँकी एवं नवरात्रि महोत्सव' में शरीक हुए पूर्व डेप्युटी मेयर उषा शास्त्री, लोनी नगर पालिका चेयरमैन रंजीता धामा, लोनी विकास पुरुष चेयरमैन मनोज धामा, करावल नगर निगम पार्षद सतपाल मास्टरजी, अंकुर विहार पार्षद भाजपा जिला मंत्री निशा सिंह, सी.ओ. दुर्गेश कुमार, लोनी एस.एच.ओ. उमेश कुमार पाण्डेय, डी.एल.एफ. चौकी इंचार्ज शरद कुमार, लोनी विधायक नंदकिशोर गुर्जर, बलराम नगर भाजपा मंडल अध्यक्ष प्रशांत कुमार, ब्र.कु. गीता, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. प्रेमलता, ब्र.कु. किरण तथा अन्य गणमान्य लोग।